



DR. GURDIP SINGH

Dr. Gurdip Singh is formerly Professor and Dean of Gujarat Ayurved University Jamnagar and at present working as Director at SDM College of Ayurveda, Hassan.

2. Born on 10th August, 1941 to a humble farming family in erstwhile Gwalior state, Dr. Singh completed his Bachelor of Ayurveda Degree from Jivaji University Gwalior securing first position in 1966. He then completed his Masters and Ph.D. Degrees from Institute of Medical Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi in 1971 and 1976 respectively. He started his career with the research unit of Indian Council of Medical Research. Thereafter, he joined CCIMH (at present CCRAS) and not long before he was beckoned by destiny to the Gujarat Ayurved University Jamnagar (Gujarat) where he dedicated twenty six years professional life up to his retirement as Dean (Head of Institution) in 2004.

3. Dr. Singh was instrumental in infusing science and raising the standard of Ayurveda research and scientific explanations of Panchakarma to its acceptance globally. Some of his contributions at Gujarat Ayurved University, Jamnagar are searching of effective Rasayana Drugs for promotion of immunity, screening of Vajikarana drugs for male infertility, establishment of Pharmacology laboratory and starting new PG courses and short term training in Ayurveda for foreigners and construction of a unique "Trigarbha Kuti" based on Vedic concept for undertaking Kaya-Kalpa Rasayana therapy. He took care of minor health problems of rural population around Jamnagar through Mobile Van. He also conducted many medical camps in the villages of Kutch district as a part of the social responsibility.

4. At Institute of PG Teaching and Research in Ayurveda Jamnagar, Dr. Singh has mentored/guided many batches of successful Postgraduate and Ph. D students of Ayurveda who are holding very high academic and administrative posts in Government as well as in renowned Ayurveda Institutions across the Country. He has also been a global ambassador of creating awareness about this ancient Indian science of Ayurveda and was invited by Institutions of France, Israel and Hungry for conducting seminars, lectures. He has been publishing free international e-journal "Journal of Ayurveda Physicians and Surgeons" which has been widely read across India and abroad. He has written about half dozen books on Ayurveda out of which two are part of Syllabus of CCIM and one is translated in Germany and another is under translation in Spanish and Portuguese languages.

5. Dr. Singh has been felicitated several times for his contributions. He got recognitions for his contributions in teaching and research of Ayurveda in the form of "Hari Om Gold Medal-Twice"; Gold Medal Award by Ayurveda Academy-Vijayawada and Best Teacher" Award. He also received "Honorary Directorship" from Reidman College for complimentary and Integration Medicine Tel Aviv-Israel. Other honours conferred upon him are "Ratna-Sadasya" award by RAV (Ministry of AYUSH-New Delhi); "Sikshana Purashkar" Award by Maha-Gujarat Medical Society; National Dhanwantri Award by Ministry of AYUSH Government of India. He has been a researcher and avid learner at heart. He has also been dedicated practitioner of documenting and passing on for future generations of like-minded selfless practitioners to come.





डॉ. गुरदीप सिंह

डॉ. गुरदीप सिंह गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर के पूर्व प्राध्यापक और डीन हैं और वर्तमान में, एसडीएम कॉलेज ऑफ आयुर्वेद, हासन के निदेशक हैं।

2. 10 अगस्त, 1941 को तत्कालीन ग्वालियर राज्य के एक साधारण किसान परिवार में जन्मे, डॉ. सिंह ने जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से 1966 में आयुर्वेद स्नातक की डिग्री प्राप्त की और प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसके बाद उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के आयुर्विज्ञान संस्थान से क्रमशः 1971 और 1976 में अपनी स्नातकोत्तर और पीएच.डी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की शोध इकाई से अपने पेशेवर जीवन की शुरुआत की। इसके बाद, उन्होंने सीसीआईएमएच (वर्तमान में सीसीआरएएस) में कार्यग्रहण किया और बहुत जल्द ही गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर (गुजरात) आ गए, जहाँ उन्होंने छब्बीस वर्ष सेवा की और 2004 में डीन (संस्थान के प्रमुख) के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

3. डॉ. सिंह ने आयुर्वेद शोध में विज्ञान को बढ़ावा देने, इसे विश्व स्तर पर मान्यता दिलाने, इसका स्तर ऊंचा उठाने और पंचकर्म की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभाई। गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर में उनके कुछ प्रमुख योगदानों में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी रसायन औषधियों की खोज, पुरुष नपुंसकता के लिए वाजीकरण दवाओं की जांच, फार्माकोलॉजी प्रयोगशाला की स्थापना और नए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू करना तथा विदेशियों के लिए आयुर्वेद में अल्पकालिक प्रशिक्षण तथा काया–कल्प रसायन चिकित्सा के लिए वैदिक अवधारणा पर आधारित अद्वितीय "त्रिगर्भ कुटी" की खोज शामिल हैं। उन्होंने मोबाइल वैन के माध्यम से जामनगर के आसपास की ग्रामीण आबादी के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का उपचार किया। उन्होंने सामाजिक दायित्व के तहत कच्छ जिले के गाँवों में कई चिकित्सा शिविर भी आयोजित किए।

4. डॉ. सिंह ने, आयुर्वेद स्नातकोत्तर शिक्षा और शोध संस्थान, जामनगर में आयुर्वेद में स्नातकोत्तर और पीएच.डी छात्रों के कई सफल बैचों को मार्गदर्शन प्रदान किया है, और वह देश भर के सरकारी संस्थानों के साथ–साथ प्रसिद्ध आयुर्वेद संस्थानों में उच्च शैक्षिक और प्रशासनिक पदों पर आसीन हैं। वह पूरे विश्व में इस प्राचीन भारतीय विज्ञान आयुर्वेद के बारे में जागरूकता पैदा कर रहे हैं। उन्हें सेमिनार आयोजित करने और व्याख्यान देने के लिए फ्रांस, इज़राइल और हंगरी के संस्थानों द्वारा आमंत्रित किया गया। वह अंतरराष्ट्रीय ई–जर्नल "जर्नल ऑफ आयुर्वेद फिजिशियन्स एंड सर्जन्स" का मुफ्त प्रकाशन कर रहे हैं, जिसे भारत और विदेशों में व्यापक रूप से पढ़ा जाता है। उन्होंने आयुर्वेद पर लगभग आधा दर्जन पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से दो सीसीआईएम के पाठ्यक्रम में शामिल हैं और एक का अनुवाद जर्मन भाषा में किया गया है और एक दूसरे पाठ्यक्रम का स्पेनिश और पुर्तगाली भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है।

5. डॉ. सिंह को उनके योगदान के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें आयुर्वेद शिक्षा और शोध के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए दो बार "हरि ओम स्वर्ण पदक"; आयुर्वेद अकादमी–विजयवाड़ा द्वारा स्वर्ण पदक पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें रीडमैन कॉलेज फॉर कॉम्पलिमेंट्री एंड इंटीग्रेशन मेडिसिन, तेल अवीव, इज़राइल द्वारा "मानद निदेशक पद" भी प्राप्त हुआ। उन्हें प्रदान किए गए अन्य सम्मानों में आरएवी (आयुष मंत्रालय, नई दिल्ली) द्वारा "रत्न–सदस्य" पुरस्कार; महा–गुजरात मेडिकल सोसायटी द्वारा "शिक्षण पुरस्कार"; आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय धन्वंतरि पुरस्कार शामिल हैं। वह एक शोधकर्ता और जिज्ञासु शिक्षार्थी रहे हैं। वह सामग्री को लिखित स्वरूप देने और इसे समान विचार वाले निःस्वार्थ चिकित्सकों की भावी पीढ़ी को सौंपने के लिए समर्पित होकर काम कर रहे हैं।





DR. VASHISHTHA NARAYAN SINGH (POSTHUMOUS)

Dr. Vashishtha Narayan Singh was an Indian academic. He taught Mathematics at various institutes during the 1960s and 1970s.

2. Born on 2nd April, 1946 to Shri Lal Bahadur Singh, a police constable, and Smt. Lahaso Devi in the Basantpur village of the Bhojpur district in Bihar, Dr. Singh was a child prodigy. He received his primary education from village school and secondary education from Netarhat Residential School. He received his college education from Patna Science College. He received recognition as a student when he was allowed by Patna University to appear for examination in the first year of its three-year B.Sc (Hons.) Mathematics course and later M.Sc examination the next year. He joined the University of California, Berkeley in 1965 and received a Ph.D in Reproducing Kernels and Operators with a Cyclic Vector (Cycle Vector Space Theory) in 1969 under doctoral advisor John L. Kelley.

3. After receiving his Ph.D, Dr. Singh joined the University of Washington at Seattle as an Assistant Professor, worked at NASA and then returned to India in 1971 to teach at Indian Institute of Technology (IIT) Kanpur. After eight months, he joined Tata institute of Fundamental Research (TIFR), Bombay where he worked on a short-term position. Later, he was appointed as a faculty at the Indian Statistical Institute, Kolkata.

4. Dr. Singh married Smt. Vandana Rani Singh in 1973 and they divorced in 1976. He was later diagnosed with Schizophrenia. With his condition worsening in the late 1970s, he was admitted to the Central Institute of Psychiatry in Kanke (now in Jharkhand). He remained there until 1985. In 1987, he returned to his village of Basantpur. He disappeared during his train journey to Pune in 1989 and was found four years later in 1993 in Doriganj near Chhapra of Saran district. He was then admitted to the National Institute of Mental Health and Neurosciences (NIMHANS), Bangalore. In 2002 and 2009, he was treated at the Institute of Human Behaviour and Allied Sciences (IHBAS), Delhi.

5. In 2014, Dr. Singh was appointed as a visiting professor at Bhupendra Narayan Mandal University (BNMU) in Madhepura.

6. Dr. Singh passed away on 14th November, 2019.





डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह (मरणोपरांत)

डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह एक भारतीय शिक्षाविद थे। उन्होंने 1960 और 1970 के दशक के दौरान अनेक संस्थानों में गणित का अध्यापन कार्य किया।

2. 2, अप्रैल 1946 को बिहार के भोजपुर जिले के बसंतपुर गांव में एक पुलिस कांस्टेबल श्री लाल बहादुर सिंह और श्रीमती लहासो देवी के घर जन्मे, डॉ. सिंह बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने गांव के स्कूल से अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की और नेतरहाट रेजिडेंशियल स्कूल से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने पटना साइंस कॉलेज से कॉलेज स्तर की शिक्षा हासिल की। उन्हें उस समय एक विद्यार्थी के रूप में सराहना प्राप्त हुई जब उन्हें पटना विश्वविद्यालय द्वारा अपने तीन वर्षीय बीएससी ऑनर्स की प्रथम वर्ष में परीक्षा में उपस्थित होने के लिए अनुमति दी गई। उन्होंने 1965 मे कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले में प्रवेश लिया और 1969 में डॉक्टरल सलाहकार जॉन एल. केली के अधीन ए साइक्लिक वेक्टर (साइकल वेक्टर स्पेस थ्योरी) के साथ रिप्रोड्यूसिंग कर्नेल्स और ऑपरेटर्स में पीएच.डी प्राप्त की।

3. डॉ. सिंह ने अपनी पीएच.डी प्राप्त करने के बाद सिएटल में वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर के तौर पर कार्य करना शुरू किया, नासा में काम किया और उसके बाद वह 1971 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर में अध्यापन कार्य के लिए भारत लौट आए। 8 महीनों के बाद, उन्होंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई में कार्यग्रहण किया जहां उन्होंने अल्पकालिक पद पर कार्य किया। तदुपरांत, उनकी नियुक्ति भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कोलकाता के फैकल्टी के रूप में हुई।

4. डॉ. सिंह ने 1973 में श्रीमती वंदना रानी सिंह से विवाह किया और 1976 में उनका तलाक हो गया। बाद में वह सिजोफ्रेनिया से पीड़ित हो गए। 1970 के दशक के अंत में उनकी दशा खराब होने पर उन्हें कांके (झारखंड) के सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ सायकेट्री में भर्ती कराया गया। वह वहां 1985 तक भर्ती रहे। 1987 में वह अपने गांव बसंतपुर लौट आए। वह 1989 में रेल से पुणे जाते हुए कहीं लापता हो गए और 4 साल के बाद 1993 में सारण जिले के छपरा के नजदीक डोरीगंज में दिखाई दिए। इसके बाद उन्हें नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंस (निमहांस) में भर्ती कराया गया। 2002 और 2009 में उनका उपचार इंस्टिट्यूट ऑफ़ ह्यूमन बिहेवियर एंड एलाइड साइंसेज, दिल्ली में किया गया।

5. 2014 में, डॉ. सिंह की नियुक्ति मधेपुरा के भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय में अतिथि प्रोफेसर के रूप में हुई।

6. डॉ. सिंह 14 नवंबर, 2019 को देहावसान हो गया।





PROF. RAMJEE SINGH

Prof. Ramjee Singh is an ex- Member of Parliament (10th Lok Sabha), a former Vice-Chancellor of Jain Vishwa Bharti, Ladnun, Rajasthan and a former Director of Gandhian Studies, Varanasi. He was also mainly responsible for establishing a separate Department of Post Graduate studies and research in Gandhian Thought in India. He was the founder Professor and Head of the Gandhian Thought in Bhagalpur University where he was earlier a Professor of Philosophy. He is widely recognized in India and abroad as an eminent Gandhian thinker as well as a committed social worker in Sarvodaya, Bhoodan, Gramdan and social reform movement led by Acharya Vinoba Bhave and Sri Jay Prakash Narayan.

2. Born on 20th December 1931 in Indrukh, Munger (Bihar), Prof. Singh participated in Quit India Movement in 1942 for which his studies was interrupted. He however passed M A in Philosophy from Patna University (1953) and obtained Ph.D. in Jaina Concept of Omniscience, D.Litt in Hindu thought and another D.Litt. in Gandhian Thought while teaching in various colleges and universities.

3. Prof. Singh has written and edited more than 50 books and presented more than 150 research papers in Philosophy, religion and culture in various conferences in India, Pakistan, Bangladesh, Nepal, Srilanka, Singapore, Thailand, China, Japan, South Korea, USSR, Egypt, South Africa, Kenya, UK, Holland, Fraince, Italy, USA, Canada, etc. He participated in World Parliament of Religions in Chicago (1993) and Capetown (2001). He also participated and led Padyatra and meetings in UK on 125th birth anniversary, and later in Noakhali (Bangla Desh) on the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi.

4. Prof. Singh was deeply involved with relief work under Bihar Relief Committee formed by J.P. during famine in Bihar in 1966-67. He was always active in establishing peace and communal harmony when the situation so demanded in Bihar, particularly in Bhagalpur. He was closely associated with J.P. Movement in 1974 for social change and organized protests against Emergency. He was arrested and detained in Bhagalpur and Hazaribag Jails for 17 months under MISA. Later on, he also worked actively and took up the cause of blinding of prisoners in Bhagalpur jail in the Supreme Court of India.

5. Prof. Singh was the Secretary General of Afro-Asian Philosophical Association, President of All India Philosophy Association and associated in various capacities with Sarva Seva Sangh, Sevagram, Sarvodaya Mandal, Harijan Sevak Sangh, Shanti Sena, Acharya Kul, Federation of University Service Teachers Association when he was jailed for one month during teachers movement.

6. Prof. Singh was honored by numerous Government and Non-Government Organizations and bodies for his academic achievements including an honorary D. Litt by Guru Govind Singh University, Haryana and Lifetime Achievement Award by Indian Council of Philosophical Research. He was also Visitor's (President of India) nominee in J.N.U. and a Professor Emeritus of UGC. He was also honored for his passionate dedication to the cause of poor, downtrodden and women as well as his commitment to the values of freedom movement and democracy by various bodies, Government Organizations including the Prime Minister. He is a true follower of Mahatma Gandhi and tirelessly works to the best of his ability for the realization of Gandhian ideals in thought, speech and action.





प्रो. रामजी सिंह

प्रो. रामजी सिंह पूर्व संसद सदस्य (10वीं लोक सभा), जैन विश्व भारती, लाडनू, राजस्थान के पूर्व कुलपति और गांधियन स्ट्डीज, वाराणसी के पूर्व निदेशक हैं। भारत में गांधीवादी चिंतन में पोस्ट ग्रेज्युएट स्ट्डीज एवं रिसर्च के पृथक विभाग की स्थापना करने में उनका प्रमुख योगदान था। वह भागलपुर विश्वविद्यालय में गांधीवादी चिंतन के फाउंडर प्रोफेसर एवं प्रमुख रहे जहाँ पहले वे दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर थे। उनको भारत और विदेशों में प्रतिष्ठित गांधीवादी विचारक तथा आचार्य विनोबा भावे और श्री जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में सर्वोदय, भूदान, ग्रामदान और समाज सुधार आंदोलन के लिए भी व्यापक स्तर पर जाना जाता है।

2. 20 दिसम्बर, 1931 को इन्द्रुख, मुंगेर (बिहार) में जन्में प्रों सिंह ने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हुई। तथापि, उन्होंने 1953 में पटना विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम. ए. किया और विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन करते हुए जैना कन्सेप्ट ऑफ ऑमनीसाइंस में पीएच. डी, हिंदू चिंतन में डी. लिट और गांधीवादी चिंतन में डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की।

3. प्रों सिंह ने 50 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं और उनका सम्पादन किया है तथा भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, जापान, दक्षिणी कोरिया, यूएसएसआर, इजिप्ट, दक्षिणी अफ्रीका, केन्या, यूके, हॉलैंड, फ्रांस, इटली, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा आदि में हुए विभिन्न सम्मेलनों में दर्शनशास्त्र, धर्म और संस्कृति विषय पर 150 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने 1993 में शिकागो और 2001 में केपटाउन में विश्व धर्म संसद में भाग लिया। उन्होंने महात्मा गांधी की 125वीं जयंती पर यूके तथा बाद में 150वीं जयंती पर नौआखली (बांग्लादेश) में पदयात्रा और बैठकों में भाग लिया तथा उनका नेतृत्व किया।

4. प्रों सिंह ने 1966–67 में बिहार में पड़े अकाल के दौरान जे. पी द्वारा गठित बिहार राहत समिति के तहत राहत कार्य में बढ़–चढ़कर भाग लिया। बिहार में, विशेष रूप से भागलपुर में जब कभी स्थिति बिगड़ी तो वह वहां शांति और साम्प्रदायिक सद्भाव कायम करने में सदैव सक्रिय रहे। वह सामाजिक बदलाव के लिए 1974 में जे. पी. आंदोलन से गहन रूप से जुड़ गए तथा आपातकाल के विरुद्ध प्रदर्शन किए। उनको मीसा (एमआईएसए) के अंतर्गत गिरफ्तार करके 17 महीनों तक भागलपुर और हजारीबाग की जेलों में रखा गया। बाद में भी उन्होंने सक्रिय रूप से काम किया और भागलपुर जेल में कैदियों के अंधे होने के मामले को भारत के उच्चतम न्यायालय में उठाया।

5. प्रो. सिंह अफ्रो–एशियन फिलोस्फीकल एसोसिएशन के महा सचिव, ऑल इंडिया फिलोस्फी एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे तथा जब शिक्षक आंदोलन के दौरान उनको एक माह की जेल हुई तो वह इस दौरान सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम, सर्वोदय मंडल, हरिजन सेवक संघ, शांति सेना, आचार्य कुल, फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी सर्विस टीचर्स एसोसिएशन से विभिन्न रूपों में जुड़े रहे।

6. प्रो. सिंह को उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के लिए अनेक सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों तथा संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। आपको गुरु गोविन्द सिंह यूनिवर्सिटी, हरियाणा द्वारा डी. लिट की मानद उपाधि तथा इंडियन काउंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया गया। वह जे. एन. यू. में विजिटर्स (भारत के राष्ट्रपति) नोमिनी तथा यूजीसी के मानद प्रोफ्रेसर भी रहे। उनको गरीबों, दलितों और महिलाओं के हित के प्रति उनके उत्कट समर्पण तथा स्वतंत्रता आंदोलन और लोकतंत्र के मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए प्रधान मंत्री सहित अनेक संस्थाओं और सरकारी संगठनों द्वारा भी सम्मानित किया गया था। वह महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी हैं और मन, वचन और कर्म तीनों से गांधीजी के आदर्शों पर चलने के लिए अपने पूरे सामर्थ्य के अनुसार अथक रूप से काम करते हैं।





SHRI DAYA PRAKASH SINHA

Shri Daya Prakash Sinha, the doyen of Hindi theatre and playwright, is recognised as India's foremost Hindi playwright. His plays are held in high esteem by literary critics, theatre critics and academics. His plays are larger than life, timeless and rare modern-classic, theatrical interpretations of actual historical, mythology or contemporary inspired events; outstanding grand spectacles that unfurl across time. More than the passive incantation of past glory, his plays highlight India's true socio-political journey: from ancient to modern era, through exploration of legendary and poignant historical characters. They exhibit pathos and drama; aptly highlighting India's cultural ethos and elemental human sensibility.

2. Born on 2nd May, 1935, Shri Sinha received his Master of Arts degree from Allahabad University in 1956. He also obtained Diploma in Painting from Allahabad University and Masters Diploma in Public Administration from Institute of Public Administration, New Delhi. He briefly joined Allahabad University (C.M.P College) as lecturer before joining U.P Civil Service and then Indian Administrative Service. With his specialization in Cultural Administration, he was associated with the administration of several cultural institutions, both during his service tenure and after, in various capacities such as Vice President of ICCR, New Delhi; Chairman and Director, Bharat Bhavan, Bhopal; Director, Cultural Affairs, U.P. Govt.; Director, Hindi Sansthaan, Lucknow; Chairman, UP Lalit Kala Akedemi, Lucknow; Chairman, UP Sangeet Natak Akedemi, Lucknow; Director, Indian Cultural Centre, FIJI; Secretary, Sahitya Kala Parishad, Delhi; Controller, Cultural Affairs, IX Asian Games (1982), Delhi; Director, North Central Zone Cultural Centre, Allahabad etc. He is credited with building highly conducive atmosphere for the growth of a whole generation of poets, painters, writers, theatre workers and intellectuals.

3. Shri Sinha has authored thirteen full-length plays and two collections of one-act plays. Being intimately connected with the theatre as director, he is endowed with that rare insight that is necessary for any playwright. The plays authored by him are: Itihas-Chakra, Oh America, Katha Ek Kans Ki, Apne-Apne Daon, Sadar Aapka, Man Ke Bhanwer, Mere Bhai: Mere Dost, Seedhiyan, Hasya Ekanki, Samrat Ashok, Sanjh Sabera, Dushman, Itihas and Rakt-Abhishek. The appeal of his plays defies language barriers. His plays have been translated in Malyalam, Kannad, Punjabi, Odiya, Telugu, Bengali and English languages. Some of his plays are prescribed in graduate/post graduate courses of various universities. Over a dozen Research Scholars in the Hindi Departments of various universities have earned Ph.D degrees on the plays written by him. His plays are regularly staged by different theatre directors and groups in various cities of India and also abroad.

4. Shri Sinha is recipient of numerous awards and honours for playwriting. He was awarded the prestigious national Award "Akademi Award" by Sangeet Natak Akademi, New Delhi in 2001 followed by 'Sardar Vallabh Bhai Patel Award for outstanding contribution to Hindi' by Kendriya Hindi Sansthan, Agra; 'Lohia Samman' and 'Sahitya Bhushan Samman' by UP Hindi Sansthan, Lucknow; 'Urmilaa Mishra Smriti Samman' by Madhya Bharat Hindi Sahitya Sabha, Gwalior; 'Akademi Samman' by U.P. Sangeet Natak Akademy, Lucknow; 'Bhuvaneshvar Samman' by Bhuvaneshwar Shodh Sansthan, Shahjahanpur.; 'Bhavbhuti Samman' by Natyaayan, Gwalior, Madhya Pradesh.; 'Fida Husain Narsee Award' by Adarsh Kala Sangam, Moradabad, U.P.; 'Dr. Lakshmi Narain Lal Smriti Samman' by Dr. Lakshmi Narain Lal Foundation, New Delhi.; 'Lifetime Achievement Award for contribution to theatre' by Chamanlal Memorial Society, New Delhi.; 'Lifetime Achievement Award for literature' by Newsmakers Broadcasting and Communication (N.B.C), Mumbai; Pratibimb Award for Lifetime Achievement in theatre' by Pratibimb Kala Darpan, New Delhi; 'Award for Lifetime contribution to performing Arts' by Abhinay Rangmanch, Hissar, Haryana; 'Bhilwada Natya Puruskar' by Bhilawada Natya Sansthan, Rajsthan; 'Sahitya Samman' by Delhi Hindi Akademi, Delhi; "Mahatma Hansraj International Hindi Shikhar Samman" by Hansraj College, University of Delhi; "Lifetime Achievement Award for theatre" by Hindi Vishwajyoti, California, U.S.A.





श्री दया प्रकाश सिन्हा

श्री दया प्रकाश सिन्हा, हिंदी रंगमंच के पुरोधा और नाट्यकार को भारत का अग्रणी हिंदी नाट्यकार माना जाता है। साहित्य समालोचकों, रंगमंच समालोचकों और शिक्षाविदों द्वारा उनके नाटकों की काफी सराहना की जाती है। उनके नाटक असाधारण, कालातीत हैं और विरल आधुनिक–प्राचीन, विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक, पौराणिक और समसामयिक घटनाओं और सर्वकालिक उल्लेखनीय प्रसंगों का नाट्य रूपांतरण हैं। अतीत के गौरव की आत्ममुग्धता से परे, उनके नाटक पौराणिक और मर्मस्पर्शी ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से, भारत की प्राचीन से आधुनिक युग तक की सच्ची सामाजिक–राजनीतिक यात्रा का परिचय देते हैं। उनमें भारत के सांस्कृतिक लोकाचार और बुनियादी मानवीय संवेदना को उपयुक्त रूप से रेखांकित करते हुए, करुणा और नाट्यकला की अभिव्यक्ति की गई है।

2. 2 मई, 1935 को जन्मे, श्री सिन्हा ने 1956 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नाकतकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से चित्रकला में डिप्लोमा और लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली से लोक प्रशासन में मास्टर्स डिप्लोमा भी प्राप्त किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश सिविल सेवा और भारतीय प्रशासनिक सेवा में आने से पहले इलाहाबाद विश्वविद्यालय (सी.एम.पी. कॉलेज) में लेक्चरर के रूप में कार्य किया। सांस्कृतिक प्रशासन में अपनी विशेषज्ञता के कारण, वह अपने सेवा कार्यकाल के दौरान और बाद में, विभिन्न पदों पर कई सांस्कृतिक संस्थानों के प्रशासन के साथ जुड़े रहे, जैसे आईसीसीआर, नई दिल्ली के उपाध्यक्ष; अध्यक्ष एवं निदेशक, भारत भवन, भोपाल; निदेशक, सांस्कृतिक कार्य, उप्र सरकार; निदेशक, हिंदी संस्थान, लखनऊ; अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी, लखनऊ; अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ; निदेशक, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फिजी; सचिव, साहित्य कला परिषद, दिल्ली; नियंत्रक, सांस्कृतिक कार्य, नौवें एशियाई खेल (1982), दिल्ली; निदेशक, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद आदि। उन्हें कवियों, चित्रकारों, लेखकों, रंगकर्मियों और बुद्धिजीवियों की एक पूरी पीढ़ी के लिए फलने–फूलने का माहौल तैयार करने का श्रेय भी जाता है।

3. श्री सिन्हा ने तेरह बड़े नाटक और दो एकांकी संग्रह की रचना की है। निर्देशक के रूप में, रंगमंच के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े होने के नाते, उन्हें रंगमंच की गहरी परख है जो किसी भी नाटककार के लिए आवश्यक है। उनके द्वारा लिखित नाटक हैं– इतिहास–चक्र, ओह अमेरिका, कथा एक कंस की, अपने–अपने दांव, सदर आपका, मन के भंवर, मेरे भाईः मेरे दोस्त, सीढ़ियां, हास्य एकांकी, सम्राट अशोक, सांझ सबेरा, दुश्मन, इतिहास और रक्त–अभिषेक। उनके नाटकों की अपील भाषा की दीवारों को तोड़ देती है। उनके नाटकों का अनुवाद मलयालम, कन्नड़, पंजाबी, ओडिया, तेलुगु, बंगाली और अंग्रेजी भाषा में हो चुका है। उनके लिखे हुए कुछ नाटक अनेक विश्वविद्यालयों के स्नातक/स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में पढ़ाए जाते हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों में एक दर्जन से अधिक शोधार्थी श्री सिन्हा द्वारा लिखे गए नाटकों पर पीएच.डी की डिग्रियां हासिल कर चुके हैं। विभिन्न रंगमंच निर्देशकों और समूहों द्वारा भारत के विभिन्न शहरों और विदेशों में उनके नाटकों का नियमित रूप से मंचन किया जाता है ।

4. श्री सिन्हा को नाट्य लेखन के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। उन्हें 2001 में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार "अकादमी पुरस्कार" से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा, उन्हें केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 'हिंदी में उत्कृष्ट योगदान के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल पुरस्कार'; उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'लोहिया सम्मान' और 'साहित्य भूषण सम्मान'; मध्य भारत हिंदी साहित्य सभा ग्वालियर द्वारा 'उर्मिला मिश्रा स्मृति सम्मान' उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ द्वारा 'अकादमी सम्मान'; भुवनेश्वर शोध संस्थान, शाहजहांपुर द्वारा 'भुवनेश्वर सम्मान'; नाट्यायन, ग्वालियर, मध्य प्रदेश द्वारा 'भवभूति सम्मान'; आदर्श कला संगम, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा 'फिदा हुसैन नरसी पुरस्कार'; डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 'डॉ लक्ष्मी नारायण लाल स्मृति सम्मान'; चमनलाल मेमोरियल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा 'रंगमंच में योगदान के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार'; न्यूज़मेकर्स ब्रॉडकास्टिंग एंड कम्युनिकेशन, मुंबई द्वारा' साहित्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार'; प्रतिबिम्ब कला दर्पण, नई दिल्ली द्वारा रंगमंच में लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए प्रतिबिम्ब पुरस्कार; अभिनय रंगमंच, हिसार, हरियाणा द्वारा 'प्रदर्शन कला में आजीवन योगदान के लिए पुरस्कार'; भीलवाड़ा नाट्य संस्थान, राजस्थान द्वारा 'भीलवाड़ा नाट्य पुरस्कार'; दिल्ली हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'साहित्य सम्मान'; हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा "महात्मा हंसराज अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिखर सम्मान", हिंदी विश्वज्योति कैलिफोर्निया अमेरिका द्वारा "रंगमंच के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है।





SHRI JAVED AHMAD TAK

Shri Javed Ahmad Tak, the specially-abled social worker, wheelchair-ridden after receiving a spinal injury in a militant attack, lives by the motto “Be A Part, Not Apart”. He has been working with specially-abled children for the last two decades.

2. Born on 1st January, 1974, in Saraf Mohalla Bijbehara of district Anantnag, Shri Tak lived a simple life in a middle class family. After completing class 12th, he got admitted to Government Degree College (Boys) Khanabal Anantnag for Bachelor's Degree in Science. He was the student of final year of B. Sc Degree when life presented him a challenge. He was hit by bullet in spine in Kashmir conflict and lost some vital organs of the body with severe spinal cord injury. His life was confined to bed and mobile only with the help of wheelchair.

3. Shri Tak started his new life with children in his locality belonging to economically poor families or labour class with free tuitions from his bed. He registered an NGO namely Humanity Welfare organization Helpline with the objective of safeguarding rights of persons with disabilities in Jammu and Kashmir and enabling persons with disabilities through education. In 2008, he started a school for children with disabilities. He gave formal education to 200 children with various disabilities. He got constructed 100% accessible Developmental centers for persons with disabilities.

4. Shri Tak's untiring efforts resulted in various achievements to his credit. Some of which are - 3% reservation in employment implementation through recruiting agencies like JKPSC, JKSSB and District level jobs; 50% fee concession to disable educated youth in submission of forms in Public Service Commission; enhancement of Conveyance allowance for government employee with disabilities increased from Rupees 200 to 1000; creation of post of Full time Disability Commissioner approved by the Governor of Jammu and Kashmir; his advocacy directly or indirectly affected two lakh persons with disability; formation of draft policy for persons with disabilities in context of PIL filed in Jammu and Kashmir high Court and provision of scribe for blind and upper limb disabled aspirants for appearing in competitive exams etc.

5. Shri Tak has been honoured with several awards and decorations for his contributions. These include National Award for Welfare of person with disabilities in 2004; Tak Zainagiri Memorial Award in 2005-2006 by Yateem Trust Jammu and Kashmir; Jammu and Kashmir State Award for Social Reforms and Empowerment in 2007; The NCPEDP Shell Helen Keller Award in 2007; Servant of the Poor Award in 2009 by Confederation of NGO's in Rural India, New Delhi; Award for Eminence in 2009 by Ability Foundation Chennai; Dr. Batras Positive Health Award 2012, New Delhi; Best Social Worker Award by Dist. Administration on Eve of Republic day 2015; Bharat Jyoti Award 2015 by India International Friendship Society, New Delhi; and Viklaanjan Swabhimaan Sammaan in 2016 by Swaraj Viklanjan Sewa samiti Allahabad .





श्री जावेद अहमद टाक

श्री जावेद अहमद टाक एक आतंकी हमले में रीढ़ की हड्डी में चोट लगने के कारण व्हीलचेयर से चलने–फिरने वाले दिव्यांग सामाजिक कार्यकर्ता "भिन्न नहीं, अभिन्न हैं" के सिद्धांत के साथ जीते हैं। वह पिछले दो दशकों से दिव्यांग बच्चों के लिए कार्य कर रहे हैं।

2. 1 जनवरी 1974 को, अनंतनाग जिले के सराफ मोहल्ला बिजबेहड़ा में जन्मे श्री टाक ने एक मध्यवर्गीय परिवार में सादा जीवन व्यतीत किया। 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात, उन्होंने विज्ञान में स्नातक उपाधि हेतु गर्वनमेंट डिग्री कॉलेज (बॉयज) खानाबल अनंतनाग में दाखिला लिया। वह बी.एससी के अंतिम वर्ष के छात्र थे जब उन्हें अपने जीवन में एक चुनौतीपूर्ण हादसे का सामना करना पड़ा। कश्मीरी संघर्ष के दौरान उनकी रीढ़ की हड्डी में गोली लगी और इस गंभीर चोट के कारण उनके शरीर के कुछ महत्वपूर्ण अंगों ने काम करना बंद कर दिया। उनका जीवन बिस्तर तक सिमटकर रह गया और वह केवल व्हीलचेयर की सहायता से चल–फिर पाते थे।

3. श्री टाक ने बिस्तर से ही अपने नए जीवन की शुरुआत की और वह अपने आसपास के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों और मजदूरों के बच्चों को निःशुल्क ट्यूशन पढ़ाने लगे। उन्होंने जम्मू और कश्मीर में दिव्यांगजनों के अधिकारों की रक्षा करने और शिक्षा के माध्यम से उन्हें सक्षम बनाने के उद्देश्य से 'ह्यूमेनिटी वेल्फेयर ऑर्गनाइजेशन हेल्पलाइन' नामक एनजीओ का पंजीकरण करवाया। वर्ष 2008 में, श्री जावेद ने दिव्यांग बच्चों के लिए एक स्कूल खोला। उन्होंने विभिन्न दिव्यांगताओं वाले 200 बच्चों को औपचारिक शिक्षा प्रदान की। उन्होंने दिव्यांगजनों के लिए 100% सुगम्य विकास केंद्रों का निर्माण करवाया।

4. श्री टाक के अथक प्रयासों के फलस्वरूप उन्हें बहुत–सी उपलब्धियां प्राप्त हुई। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:– जेकेपीएससी, जेकेएसएसबी जैसी भर्ती एजेंसियों के माध्यम से और जिला स्तरीय नौकरियों में 3% आरक्षण लागू करवाना; लोक सेवा आयोग का फॉर्म भरने में शिक्षित दिव्यांग युवाओं के लिए फीस में 50% की छूट; दिव्यांग सरकारी कर्मचारियों के वाहन भत्ते को 200 रु. से बढ़ाकर 1000 रु. करवाना; जम्मू और कश्मीर के राज्यपाल की मंजूरी से पूर्णकालिक दिव्यांग आयुक्त पद का सृजन करवाना; उनके परामर्श से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से दो लाख दिव्यांगजनों को फायदा हुआ; जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय में दायर की गई जनहित याचिका के संबंध में दिव्यांगजनों के लिए ड्राफ्ट पॉलिसी तैयार करवाना तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में दृष्टि और ऊपरी अंग बाधित उम्मीरदवारों के लिए लेखन सहायक का प्रावधान करवाना आदि।

5. श्री टाक को उनके योगदानों के लिए बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें 2004 में दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; जम्मू और कश्मीर यतीम ट्रस्ट द्वारा 2005–2006 में प्रदान किया गया टाक जैनागिरी स्मृति पुरस्कार; 2007 में सामाजिक सुधार और सशक्तीकरण के लिए जम्मू और कश्मीर राज्य पुरस्कार; 2007 में एनसीपीईडीपी शेल हेलन केलर पुरस्कार; ग्रामीण गैर सरकारी संस्थाओं का परिसंघ, नई दिल्ली द्वारा 2009 में प्रदान किया गया सर्वेंट ऑफ दि पुअर अवार्ड; एबिलिटी फाउंडेशन, चेन्नै, द्वारा 2009 में अवार्ड फॉर एमिनेन्स; डॉ. बत्राज पॉजिटिव हेल्थ अवार्ड 2012, नई दिल्ली; गणतंत्र दिवस 2015 की पूर्व संध्या पर जिला प्रशासन द्वारा प्रदान किया गया सर्वश्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता पुरस्कार; इंडिया इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा 2015 में प्रदान किया गया भारत ज्योति पुरस्कार; तथा स्वराज विकलांगजन सेवा समिति, इलाहाबाद द्वारा 2016 में प्रदान किया गया विकलांगजन स्वाभिमान सम्मान शामिल हैं।